Notification No- 516/2022
Date of Award- 28/06/2022

शोधार्थी
शालिनी शर्मा

शोध–निर्देशक
प्रो. कहकशां ए साद

हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषासंकाय

देशज आधुनिकता के सन्दर्भ में कबीर की कविता का अध्ययन

पाँच बीज शब्दः देशज आधुनिकता, समाजैतिहासिक परिवेश, कबीर की कविता, देशज–भाषा, व्यापारिक पूँजीवाद।

देशजता प्रकृति की तरह अत्यधिक आत्मनिर्भर, सहनशील तथा अपने स्थान पर बने रहने के बावजूद एक गतिशील प्रक्रिया है। देशजता अपनी संस्कृति का संवहन और संरक्षण करती है। सैद्धान्तिक स्तर पर देशीयता की नींव के अभाव में अन्तर्राष्ट्रीय संकल्पना असम्भव साबित होती है। देशजता बहुकेन्द्रीय, वर्णनपरक और प्रत्यक्ष संकल्पना है तो अन्तर्राष्ट्रीयता कृत्रिम और परजीवी। देशजता को विशिष्ट संकल्पना न मानकर एक सामान्य अपरिहार्य तथ्य मानना होगा। देशजता का तत्व एक खास संस्कृति द्वारा निर्मित भली–बुरी, छोटी–बड़ी सभी तरह की कृतियों द्वारा प्रकट होता है।

आधुनिकता की जड़े भारतीय परम्परा, अपनी संस्कृति और लोक चेतना से जुड़ी हुई है। आधुनिक दृष्टि के कारण ही हम देख पाने में समर्थ होते हैं कि

बाजार कैसे हमारे जीवन की प्राथमिकताओं को तेजी से बदल रहा है। पश्चिम की आधुनिकता धर्म को अस्वीकार करने के बावजूद धार्मिक भेदभाव का शिकार है, जबकि कबीर की देशज आधुनिकता धर्म को नया अर्थ देती है। व्यापार एक प्रवृत्ति है इसे आधुनिकतावादी रचनाकार ही कह सकता है और कबीर ने इसे बार–'बार कहा है। कबीर बाजार को चुनौती देते हैं। वे करघे पर काम करते हैं, मुनाफे से मुनाफा नहीं कमाते। उन्होंने सामंतवाद और पूँजीवाद पर साथ–साथ प्रहार किया। देशज आधुनिकता को प्रकट करने के लिए वे देशभाषा और प्रतीकों का सहारा लेते हैं। कबीर के आधुनिक बोध का महत्त्व इस बात में निहित है कि वे इतिहास की जड़ता और परिवर्तनशीलता दोनो को पहचानते हैं। कबीर की देशज आधुनिकता में व्यक्ति–सत्ता का महत्त्व तो था, किन्तु व्यक्तिवाद नहीं था। कबीर ने आधुनिकता से सम्बन्धित अतियो से बचते हुए उसकी देशजता को मानव जीवन के विकास के संदर्भ में व्यक्त किया है। कबीर अपने समय और समाज की आर्थिक स्थितियों पर भी बराबर ध्यान देते है। कबीर यह जानते थे कि आर्थिक विषमता मानवकृत है। कबीर मृत्युबोध से भी टकराते हैं, किन्तु देशज स्तर पर ही वे उससे भय या त्रास नहीं खाते। कबीर की कविता भारत के समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की कविता है। कबीर अपनी दार्शनिकता को कविता में समेट लेते हैं।